International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-08-2021, Accepted: 05-09-2021, Published: 20-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 50-52

वर्तमान मीडिया में भारतीय दृष्टिकोण (मुल्यों व सिद्धान्तों) की स्थापना हेतु महर्षि नारद का भक्ति सूत्र

पूजा त्रिपाठी
शोध छात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान समय डिजीटल मीडिया का युग है। जहाँ पर अनियन्त्रित सूचनाओं का भण्डार है। आज यह तय करना मुश्किल है कि कौन–सी सूचना सत्य है और कौन–सी असत्य। वर्तमान मीडिया को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसका एकमात्र कारण भारतीय मूल्यों व सिद्धान्तों का धीरे–धीरे लुप्त हो जाना है। मूल्य और सिद्धान्त किसी भी क्षेत्र की मर्यादा व नैतिकता को तय करती है। अतः वर्तमान मीडिया में पूनः भारतीय दृष्टिकोण, मूल्य व सिद्धान्तों की स्थापना हेतु हम महर्षि नारद (पत्रकारिता के अधिष्ठाता) के भक्ति सूत्र का अध्ययन कर वर्तमान मीडिया में इनका प्रयोग कर मीडिया को एक नई दिशा प्रदान कर वर्तमान में होने वाली अनेक चुनौतियों से बचा सकते है। प्रस्तुत पत्र प्रारम्भिक भाग में महर्षि नारद का सक्षिप्त वर्णन किया गया है साथ ही उनके भक्ति सूत्र पर प्रकाश डालते हुए यह बताया गया है कि किन–किन सूत्रों का प्रयोग वर्तमान मीडिया में करके हम भारतीय मूल्यों व सिद्धान्तों की पुनर्स्थापना कर सकते है।

मूलशब्द: महर्षि नारद, मीडिया, भक्ति सूत्र, चुनौतियां, समाधान

प्रस्तावना
जैसा कि हम जानते है हमारा भारत देश अपने धार्मिक रिति–रिवाज, संस्कृति व नैतिक मूल्यों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। हमारे समाज में प्राचीन काल से ही प्रत्येक कार्यक्षेत्र के लिए हमारे पूर्वजों ने विशेष देवी–देवता को सुनिश्चित किया है। उदाहरण के रूप में देखे तो शुभ कार्य के प्रारम्भ के लिए गणेश देवता, धन के कामना के लिए लक्ष्मी देवी, विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती देवी इत्यादि ऐसे ही अनेक देवी–देवता का पूजन व स्मरण किया जाता है। उसी प्रकार, जब भी समाज में पत्रकारिता व संचार से सम्बन्धित आदर्शो मूल्यों की पुनर्स्थापना पर विचार किया जाता है तो महर्षि नारद का स्मरण अपने आप हो जाता है, क्योंकि उन्हें संचार का पिता व अधिष्ठाता माना गया है। उनके संचार से सम्बन्धित सभी कार्य लोकमंगल व विश्वसनीय थे।

प्राचीन काल से ही संचार के जन्मदाता 'महर्षि नारद' को माना जाता है। वह ब्रह्मा के पूत्र थे। वह विश्व में घटित होने वाले कोई भी समाचार को अन्य लोगों तक पहुंचाते थे, उस समय हमारे समाज में लोग 'भारतीय दर्शन' के दृष्टिकोण को अपनाते थे तथा इसी को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। उस समय हमारे समाज में पाश्चात्य सभ्यता का कोई अस्तित्व नहीं था। भारतीय मूल्यों और नीतियों का उपयोग संचार में किया जाता था ताकि समाज में लोकल्याण की भावना जाग्रत रहे।

प्राचीन ग्रन्थों में 'नारद' के लिए 'पिशुन' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'पिशुन' का अर्थ होता है–सूचना देने वाला, संकेत देने वाला, भेद बताने वाला, संचारक इत्यादि। 'आचार्य पिशुन' शब्द कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में कई बार आया है और प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में भी 'आचार्य पिशुन' के नाम से 'नारद जी' को सम्बोधित किया जाता है।

श्री वैकेट लाल ओझा लिखते है कि 'महर्षि नारद' एक विशेष संवाददाता की तरह स्थल मार्ग को न अपनाकर आकाश मार्ग से भ्रमण करते थे और एक राजा से दूसरे राजा के दरबार तक खबरे पहुंचा कर स्वर्ग लोक और मृत्युलोक के बीच सीधा संचार सम्बन्ध स्थापित करने में समर्थ थे। वे उन लोगों की किर्ति–कथा सूनाते थे जो अपना धैर्य, शौर्य, आत्मत्याग और धर्म परायणता के लिए विशिष्ट सराहना के पात्र थे।''[1]

इस प्रकार हम कह सकते है कि उनका पत्रकारिता अध्यात्म पर आधारित था जिसमे क्षल, कपट, व लोभ के स्थान पर परमार्थ की श्रेष्ठता थी।

सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि नारद को संचार का अधिष्ठाता अभिहित करने के पीछे क्या कहानी है पूराणों के अनुसार ब्रह्मा जी के आदेश पर उनके पुत्र 'दक्ष' ने सौ पुत्र पैदा किए और सभी पुत्रों को सृष्टि बढ़ाने का आदेश दिया लेकिन ब्रह्मा जी के मानसपुत्र और 'दक्ष' के भाई 'नारद' ने सभी दक्ष पुत्रों को सृष्टि से अलग कर तप में लगा दिया। 'दक्ष' ने पुनः पुत्र पैदा कर सृष्टि का आदेश दिया किन्तु दक्ष के पुत्रों को भी नारद ने पुनः सृष्टि के स्थान पर तपस्या में लगाया। अतः जिससे क्रोधित होकर दक्ष नारद जी को श्रापित किये थे जो निम्न है–

1. सदा विचरण करेगे
2. कही अधिक समय तक नहीं रूकेगे
3. एक स्थान की सूचना दूसरे स्थान पर पहुचाएगे।[2]

उसी समय से 'नारद जी' सूचनाओं का आदान–प्रदान करने लगे। वह राक्षस के दुष्ट कार्यो का विवरण व सज्जन मनुष्य के रक्षा हेतु समाचार देवताओं के मध्य ले जाने लगे। इस प्रकार से वह सूचनाओं का तीनों लोगों में विचरण करने लगे। उनका कार्य लोकसंग्रह के लिए था इसमे क्षल–कपट, स्वार्थ का कोई स्थान नहीं था। इस प्रकार, हम कह सकते है कि वास्तव में पत्रकार का यह गुण व विशेषता है कि वह जो भी कार्य करे लोग के हीत में रहे। इस प्रकार, संचार के जन्मदाता, आचार्य नारद' को माना जाता है।

नारद जी का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने के उपरान्त यदि हम उनके संचार सिद्धान्तों व मूल्यों पर ध्यान केन्द्रित करे तो हमे ज्ञात होगा कि उनके सिद्धान्त, संचार की विश्वसनीयता, पारदर्शिता, सत्यता इत्यादि को कैसे बनाये हुए था। अतः मैं नारद भक्ति सूत्र का विश्लेषण कर व्याख्यायित करने का प्रयत्न करूँगी।

नारद भक्ति सूत्र में 84 सूत्र है। जब हम इन सूत्रों का अध्ययन

करते है तो ऐसा प्रतीत होता है भक्त और ईश्वर के प्रेम भाव का वर्णन है। भक्त को ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग से परिचित कराया जा रहा हों लेकिन जब हम इन सूत्रों का गहन अध्ययन करते है तो हमे यह ज्ञात होता है कि हम इन सूत्रों को वर्तमान मीडिया में लोकमंगल की भावना हेतु परिलक्षित करें तो वर्तमान मीडिया में भारतीय मूल्यों व सिद्धान्तों की स्थापना हो सकती है। जिसके उपरान्त मीडिया समाज को नई दिशा से परिचित करायेगी। अर्थात् यह लोक के हित में होगा।

तल्लक्षणानि वच्यन्ते नानामतभेदात।।

अर्थात् मतो में विभिन्नता व अनेकता है। यही पत्रकारिता का मूल सिद्धान्त है।[2]
जैसा कि हमे भक्ति के विषय में अनेक ऋषियों के मत मिले जिनके विचारों में अत्यधिक असमानता देखने को मिलता है लेकिन नारद जी जब भक्ति पर अपना मत व्यक्त करते है तो कहते है कि किसी भी भक्ति के मत को मानने से पहले उसके विषय में स्वयं की अनुभूति व चिन्तन आवश्यक है। उसी प्रकार प्रत्येक पत्रकार को किसी भी विषय पर सभी दृष्टियो से चिन्तन करके निष्पक्षता के साथ ही उस विचार को लोकहित में प्रसारित करना चाहिए।

तद्विहीनं जाराणामिव।।23।।[3]

अर्थात् वास्तविकता की अनुपस्थिति घातक है। जैसा कि वर्तमान मीडिया बिना तथ्यों का जांच किये उनको समाज में प्रसारित कर देता है जो समाज में हिंसा फैलाता है, लोगों में मतभेद की भावना जाग्रत करता है। अतः इस सूत्र का यह अर्थ निकाला जा सकता है कि मीडिया को बिना तथ्यों की छानबीन किये किसी भी समाचार को समाज में प्रसारित नहीं करना चाहिए।
इस विषय में कबीरदास का लोकप्रिय दोहा है–

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।।

अर्थात् तथ्यों का बिना जाँच पड़ताल किये अवास्तविक खबरों का प्रसार समाज के हित के लिए घातक है।

दुःसंङ्गः सर्वथैव त्याज्यः।।43।।[4]

अर्थात् हर हाल में बुराई त्याग करने योग्य है, उसका प्रतिपालन या प्रचार–प्रसार नहीं करना चाहिए। इस सूत्र का संकेत नकारात्मक मीडिया की तरफ है। हम देख सकते है कि वर्तमान मीडिया टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए अर्थहीन समाचार अर्थात् जिन समाचारों की कोई मूल्य नहीं होता है उनको भी छाप देती है। जिससे समाज को अर्थ का अनर्थ संदेश प्राप्त होता है और मैं यह स्पष्ट शब्दों में कह सकती हूँ की नकारात्मक पत्रकारिता विष के समान होती है, जितना एक पेन में बल होता है समाज के उत्थान और पतन में, उतना तलवार में क्षमता नहीं होती है। इसीलिए मीडिया को हमारे देश में चौथा स्तम्भ का दर्जा दिया गया है।

कस्तरति कस्तरति मायाम्? यः सङ्ढास्त्यजाति यों
महानुभावं सेवते, निर्ममो भवति।46।।[5]

अर्थात् बुराई लहर के रूप में आती है परन्तु शीघ्र ही वह समुद्र का रूप ले लेती है। इस सूत्र का आशय यहा यह लगाया जा सकता है कि–
मीडिया का कार्य है समाज में सत्य सूचनाओं का प्रसार करके लोगों को जागरूक करना। जिस प्रकार किसी कालोनी में एक गैस की पाइपलाइन सभी घरों से जुड़ी होती है और गैस प्रत्येक घरों में पहुँचता है जिससे लोगों के घरों में समय से खाना बनता है। उसी प्रकार मीडिया अपने अनेक माध्यमों के द्वारा पूरे समाज से जुड़ी है। जैसे पाइपलाइन में एक जलती हुई माचिस की तीलि घातक हो सकती है और वह हजारों लोगों की जान ले सकती है उसी प्रकार मीडिया के द्वारा दिया गया एक गलत खबर हिंसा, आतंक का रूप ले सकता है। इसीलिए मीडिया को हमेशा सकारात्मक व सत्य खबरों का ही प्रसार करना चाहिए।

स्त्रीधननास्तिकवैरिचरित्रं न श्रवणीयम्।।63।।[6]

नारद ने संवाद में कुछ विषयों का निषेध किया है। वह है
1. स्त्रियों व पुरूषों के शरीर व मोह का वर्णन।
2. धन, धनियों व धनोपार्जन का वर्णन।
3. नास्तिकता का वर्णन
4. शत्रु की चर्चा

आज तो ऐसा लगता है मीडिया की विषय वस्तु इन चारों के अतिरिक्त है ही नहीं।

नास्ति तेषु जाति विद्यारूपकुलधनक्रियादिभेदः।।72।।

अर्थात् जाति, विद्या, रूप, कुल, धन, कार्य आदि के कारण भेद नहीं होना चाहिए।
इस सूत्र में एकात्मकता की बात की गई है और समाज में भेद उत्पन्न करने वाले कारकों को बताकर उनका निषेध करने का आदेश दिया गया है। पत्रकारिता किसके लिए हो व किनकें विषय में हो यह आज एक महत्त्वपूर्ण विषय है जिसका समाधान इस सूत्र में मिलता है।[7]

अहिंसासत्यशौचदयास्तिक्यादिचारिन्नयाणी परिपालनीयानि।।78।।[8]

अर्थात् अहिंसा, सत्य, शौच (शुद्धता), दया (संवेदनशीलता) आस्तिकता (विश्वास) आदि आचरणीय सदाचारों का भलीभाँति पालन करना चाहिए। इस सूत्र में नारद जी का आशय पत्रकार के गुणों से है जिनका समावेश उनके व्यक्तित्व में होना अति आवश्यक है।

मोदेन्तो पितरो नृत्यन्ति देवताः सनाथा चेयं भूर्भववति।।71।।[9]

अर्थात् (ऐसे भक्तों का आविर्भाव देखकर) पितरगण प्रमुदित होते है, देवता नाचने लगते है और यह पृथ्वी सनाथा हो जाती है।
इस सूत्र का गहन अध्ययन करने के उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि नारद के उपर्युक्त परामर्श को अगर मान लिया जाय तो सबकुछ आनन्दित व पृथ्वी स्वर्ग बन जायेगी। इसमे सबसे महत्त्वपूर्ण विषय प्रवृत्ति है क्योंकि वर्तमान समाज का सृजन मीडिया पर निर्भर हैं। प्रश्न उठता है कि समाज का मीडिया सृजन करने के लिए किस प्रकार की प्रवृत्तियों को अपनाता है? क्योंकि वर्तमान में समाचार, चलचित्र, विज्ञापन, कला, साहित्य इत्यादि सभी कार्य धनोपार्जन की प्रवृत्ति से होता है। जिससे समाज में कलह, भ्रष्टाचार, क्षल, धोखा, असत्य व हिंसा का जन्म होता है।

शान्तिरूपात्परमानन्दरूपाच्च।।60।।[10]

'सत्' अर्थात् अनुभव, 'चित्' अर्थात् चेतना और 'आनन्द' अर्थात् अनुभूति। अर्थात् पत्रकारिता की प्रक्रिया भी ऐसी ही हो।

इस सूत्र में सृजनात्मकता की प्रक्रिया की तरफ ध्यान केन्द्रित किया गया है। सत् चित् आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द से सृष्टि का सृजन होता है उसी प्रकार पत्रकारिता की भी प्रक्रिया होनी चाहिए। किसी भी समाचार से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करना, उनका विश्लेषण करना, खबरों की जाँच–पड़ताल कर उनकी अनुभूति करना उसके उपरान्त समाज में अभिव्यक्त करना। इसका परिणाम दुःख, हिंसा, प्रतिद्वंद्विता, द्वेष, असत्य का प्रसार या मैत्री, करूणा, सुख, शांति, प्रेम, सहनशीलता कुछ भी हो सकता है। यह विकल्प समाज को तय करना है कि वह क्या चुनता है।

अन्त में मैं यही कह सकती हूँ कि नारद भक्ति सूत्र के विश्लेषण करने का एकमात्र मेरा यही उद्देश्य है कि वर्तमान मीडिया जो आज अपराध का भण्डार हो चुकी है पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव ने मनुष्य के ध्यान को भंग कर दिया है। वह मीडिया के द्वारा दिखाये गये सभी चीजों का नकल इतना करने लगे है कि उनका सुख, दुःख, वेश–भूषा इत्यादि सब मीडिया पर निर्भर हो गया है। नारद भक्ति सूत्र का विश्लेषण कर मैं आज संसार में हो रहे भ्रष्टाचार, अपराध आतंकवाद, साइबर क्राइम इत्यादि की प्रचुरता को कम कर मीडिया को एक नई राह अर्थात् सत्य की राह पर ले जाने की बात करती हूँ। क्योंकि भारतीय मूल्यों व सिद्धान्तों का पत्रकारिता में स्थापित होना अतिआवश्यक है। जिससे वर्तमान में हो रहे मानवता के पतन की रक्षा की जा सके। मीडिया जो कि विश्वसनीयता का प्रतीक माना जाता है, लोग मीडिया के द्वारा दिये गये खबरों से अपने आप को जागरूक करते है। अतः लोक की विश्वसनीयता क्षीण न हो इसलिए हमें वर्तमान मीडिया जो कि पथभ्रष्ठ हो चुकी है, मीडिया से पारदर्शिता, नैतिकता, सत्यता, विश्वसनियता इत्यादि सम्पूर्ण रूप से लुप्त ही हो चुका है। अतः जैसा कि हम जानते है कि मीडिया को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहा गया है और देश की उन्नति और अवन्नति इसी पर कायम है। अर्थात् हम मीडिया को शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थि रीढ़ की ग्रन्थि का दर्जा दे सकते है और भारतीय मूल्यों और सिद्धान्तों को मनुष्य का श्वास कह सकते है जिसके बिना मनुष्य का जीवित रहना मुश्किल है। और हम वर्तमान मीडिया में भारतीय दृष्टिकोण की स्थापना महर्षि नारद भक्ति सूत्र का अनुसारण करके कर सकते है। अतः उपर्युक्त नारद भक्ति सूत्र का अध्ययन करने उपरान्त हम कह सकते है कि वर्तमान मीडिया में नारद के दार्शनिक विचार को स्थापित करना अति आवश्यक है क्योंकि दर्शन के अभाव में वर्तमान मीडिया की कमी को दूर नहीं किया जा सकता है।

लेखक ओम प्रकाश सिंह उचित ही कहते है–''संचार और पत्रकारिता में प्रयोग है, उपयोग है, सिद्धान्त है परन्तु दर्शन नहीं है। दर्शन के अभाव में संचार और पत्रकारिता की वर्तमान यात्रा जारी है। हमे वर्तमान में संचार एवं पत्रकारिता के दार्शनिक आयाम को तलाशना है जिसमे 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन' एक आधार होगी। संचार और पत्रकारिता में भी दार्शनिक विकास के लिए यह जरूरी है कि संचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रारंभिक चिंतन और चिन्तक की खोज हो। इसी प्रक्रिया में भारत में जन–जन के परिचित, सूचक अथवा संचारक देवर्षि नारद को मैंने अपने अध्ययन का आधार बनाया।''

संदर्भ सूची

1. डॉ. संजीव भानावत, पत्रकारिता का इतिहास एवं जन–संचार माध्यम, तृतीय संस्करण, 2000, पृ.सं. 11
2. प्रो. बृजकिशोर कुठियाला, मीडिया को नई राह बताते है नारद के भक्ति सूत्र। https://www.pravakta.com/narada-bhakti-sutras-in-a-line-to-the-media-show/
3. द्वियहिमाचल, श्रेष्ठसंचार के देवर्षि, 2017 https://www.divyahimachal.com
4. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 5
5. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 8
6. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 9
7. प्रो. बृजकिशोर कुठियाला, मीडिया को नई राह बताते है नारद के भक्ति सूत्र। https://www.pravakta.com/narada-bhakti-sutras-in-a-line-to-the-media-show/
8. एस.के. आजाद, वर्तमान में देवर्षि नारद की प्रासंगिकता, 2019।
9. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 16
10. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 14
11. नारद–भक्ति–सूत्र एवं शाण्डिल्य–भक्ति–सूत्र, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. 12
12. लोकेन्द्र सिंह, पत्रकारिता के दार्शनिक आयाम का आधार है 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन', 2018, पृ.सं. 12